

Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 9, September 2013





Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 18, No. 9, September 2013

वर्ष 18, अंक 9, सितम्बर 2013

Editor / संपादक

Manas Ranjan Mahapatra

मानस रंजन महापात्र

Assistant Editors / सहायक संपादकगण

Deepak Kumar Gupta

दीपक कुमार गुप्ता

Surekha Sachdeva

सुरेखा सचदेव

Production Officer / उत्पादन अधिकारी

Narender Kumar

नरेन्द्र कुमार

Illustrator / चित्रकार

Mistunee Chowdhury

मिस्तुनी चौधुरी

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Printed at Pushpak Press Pvt. Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Ph-I Okhla Ind. Area, New Delhi.

Typeset at Nath Graphics, 1/21, Sarvapriya Vihar, New Delhi-110016

Contents/सूची

सात समुंदर	डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी	3
Take Care!	Jessie Wee	5
झूम-झूम झपाक	प्रभात	10
बातूनी कछुआ	हरिकृष्ण देवसरे	11
The Old Woman	Devina Basu	13
Grandmother	Hemant Kumar	16
लालची हलवाई	मीता संगेलियाँ	17
चटपटे दही-बड़े	अनिल 'सवेरा'	20
A Foolish King	Prabir Kumar Pal	21
Two Poems	Dash Benhur	22
जब ताजमहल नीलाम...	अंकुश जैन	23
शेर की दावत	पूनम मिश्रा	25
Dehradun 2025	Kartik Dhiman	26
पहेलियाँ	लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'	27
The Portrait	Darshil Shastri	28
जानवर सम्भालें धागा-कैंची	आइवर यूशिएल	29
Interesting Facts...	Surekha Sachdeva	30

Editorial Address / संपादकीय पता

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 5.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 50.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को निःशुल्क वितरित किया जाता है।

Tales for Today's Children: Connecting to the Roots

The National Centre for Children's Literature (NCCL) of National Book Trust, India in association with India Trade Promotion Organisation and Federation of Indian Publishers organized an interactive discussion on the topic *Tales for Today's Children: Connecting to the Roots* during Delhi Book Fair 2013 at Pragati Maidan, New Delhi on 29 August 2013. Dr Sharbari Banerjee, musicologist from NCERT and Shri Rajendra Upadhyaya, author and broadcaster from the News Services Division, All India Radio were the key speakers on the occasion. Shri M.A. Sikandar, Director, NBT, presided over the function.

Shri Sikandar in his introductory note welcomed the guests and observed that children today are trying to identify their roots and therefore, they use internet to gather information. But they are not aware that internet does not provide complete information what a book can. Therefore, there is a need to guide them through books in different Indian languages. He added that languages are important as they are part of our tradition and culture. He asked children to visit libraries to gain knowledge on the larger world.

Dr Sharbari Banerjee felt that children should read more and more books as education helps in building character and opinions. She felt that fantasy books, action tales, books about the great revolutionaries and great emperors of India



help children to rediscover and connect to their roots.

Shri Rajendra Upadhyaya in his paper titled *Popcorn Zaroori Ya Kitaab?* discussed about children's literature and reading habits of children in India at present. He observed that, "to know more about culture we need good books. We also need to tell children about our culture and literature."

This interactive discussion was part of the NCCL's Monthly Meeting Programme. Renowned authors and educationists like Shri Divik Ramesh, Shri Prempal Sharma, Shri Lakshmi Khanna 'Suman', Shri Rajnikant Shukla, Shri Ajay Vir, Prof. Chandrabhanu Pattnaik, Shri Satya Paul, Smt. Prem Dhingra, Smt. Kumud Kapoor, teachers, librarians and children from various schools of Delhi also participated in the discussion. The programme was coordinated by Shri Manas Ranjan Mahapatra, Editor (NCCL).

Readers' Club Orientations



With a view to promote pleasure reading habit among children and strengthen the cause of children's literature, two orientation programmes for teachers on *How to Run a Readers' Club* were organized by National Centre for Children's Literature, a wing of National Book Trust, India at Kharagpur (West Bengal) and Bhavnagar (Gujarat) in the month of July 2013.

The Readers' Club Orientation at Kharagpur was held at the South Eastern Railway Girls Sr. Secondary School on 18-19 July 2013. Shri R.K. Kulshrestha, Division Railway Manager inaugurated this 2-day event along with an exhibition of NBT's books for children. Shri Prempal Sharma, Executive Director, Railway Board, Shri Manoj Panday, Chief Personnel Officer and several dignitaries from the Ministry of Railways graced the session.

The 2-day event was attended by the teachers, principals and librarians of over 30

schools under South Eastern Railways. The participants discussed about the changing trends and dimensions of reading, creative writing, storytelling skills, how to decide a book for children's pleasure reading and how to hold interactive session with authors and people connected with the world of reading. With the resource support from Dr. Kripa Sankar Chaubey and Smt. Sailabala Mahapatra eminent authors and educationist, Smt Karabi Mukhopadhyay, Principal and Shri Manas Ranjan Mahapatra, Editor, NBT-NCCL coordinated the event.

Bhavnagar Zilla Prathamik Siksha Sangh, the district level teachers' body of Bhavnagar, Gujarat collaborated with the Trust for the Readers' Club orientation for teachers at Bhavnagar on 23 July 2013. Over 100 teachers and teacher educators attended the programme.

The event was inaugurated by Dr Nalin Pandit, Former Director, GCERT. The participants were briefed by the resource persons about various means and modes for developing joyful reading atmosphere for children. With the resource support from Shri Parikshit Jushi, eminent journalist and educational activist and the various office bearers of the teacher's body, the event was coordinated by Shri Bhagyendra Patel, Gujarati Language editor of the Trust.

सात समुंदर बैडमिंटन

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

“आह!”

आर्थर ने करवट बदली। खिड़की से आने वाली छाया लंबी हो गई है। अँधेरा हो रहा है। फिर से रात की आहट पाकर आर्थर मानो बेचैन हो उठा। आज नींद आएगी? ओह! कितने दिन हो गए, ठीक से चैन की नींद वह सो न सका। पलक झपकते ही दिमाग में मानो एक झनझनाहट-सी होने लगती है। हे प्रभु, और कितने दिन! और कितने दिन ये यंत्रणा झेलनी है?

उसके हृदय में एक टीस-सी उठी। ओणम का पर्व है। वह अपने गाँव न जा सका। वहाँ माँ अकेली क्या कर रही होगी? रैचेल भी तो परदेस में ही है। आज माँ और दीदी की बहुत याद आ रही है।

तिरुवनंतपुरम के कनाबट्टम में रवि वर्मा राष्ट्रीय खेल एवं शारीरिक शिक्षा की बहुत बड़ी संस्था है। राजा रवि वर्मा केरल के विख्यात चित्रकार थे। आज भी उत्तर भारत के प्राचीन घरों में उनके बनाए हुए ‘शकुंतला’, ‘नल-दमयंती’, ‘सीताहरण’ आदि के चित्र दीवारों पर टँगे हुए देखने को मिलते हैं। बैडमिंटन चैम्पियन आर्थर इसी इंस्टीट्यूट के होस्टल में अपने कमरे में लेटा हुआ था। महीनों हो गए, वह अभ्यास के लिए जा न सका।

अँधेरे में उसकी आँखों के सामने एक-एक तस्वीर तैरने लगी। कभी बचपन की तो कभी इधर के दिनों की।

“आर्थर, चल, तू उधर से खेल, मैं इधर हूँ।” पिल्लई की बात उसके कानों में गूँजने लगी।

दोनों अपनी-अपनी फाइल की दफ्ती से एक गेंदे के फूल को उछाल-उछालकर स्कूल के मैदान में खेल रहे थे। बच्चे कितने थोड़े में आत्मसंतोष कर लेते हैं! वे इधर से उधर उछलने लगे।



“ले, अब मार!”

दोनों एक-दूसरे को ललकार रहे थे।

तभी किसी ने आर्थर के कंधे पर हाथ रखा, “बैडमिंटन खेलना है तो उसके लिए रैकेट क्यों नहीं लेते?”

दोनों खिलाड़ी सकपकाकर खड़े हो गए। कक्षाएँ समाप्त हो चुकी थीं। वे स्कूल के मैदान में खेल ही रहे थे कि अचानक हेडमास्टर नारायणन की दृष्टि उन पर पड़ी। केवल पढ़ाई नहीं, बच्चों के लिए खेल-कूद भी आवश्यक है। इसलिए वे इसमें भी रुचि लेते थे।

तीसरे ही दिन पाँचवीं पीरियड खत्म होते ही उनका बुलावा आया। स्कूल के चपरासी कोरन ने आकर कहा, “हेडमास्टर साहब आर्थर और पिल्लई को बुला रहे हैं।”

बात क्या है? यही सोचते-सोचते दबे पाँव वे पहुँचे हेडमास्टर के ऑफिस में। वहाँ गेम्स टीचर पद्मनाभम सर भी मौजूद थे। नारायणन ने दो बैडमिंटन रैकेट दिखाकर कहा, “यह लो, इसी से प्रैक्टिस करो। मैंने कोर्टटयम से मँगा लिये हैं। पद्मनाभम सर तुम लोगों को कोच करेंगे।”

यहीं से उसकी यात्रा आरंभ हुई।

फिर पढ़ाई के साथ-साथ बैडमिंटन भी चलने लगा। चिरूता और रैचेल दोनों उसका साथ देती थी। पिता जी तो केवल अपने काम में ही व्यस्त रहते थे। उन्हें इतनी फुर्सत कहाँ थी!

रैचेल भाई से कहती, “तू बाहर खेलने जाएगा। जीतकर आएगा। हम लोगों का नाम रोशन होगा। अम्मा कितनी खुश होगी!”

एक-एक कदम चलते-चलते आदमी कितनी दूरी तय कर लेता है! स्कूल से कॉलेज, फिर कॉलेज से रवि वर्मा स्पोर्ट्स इंस्टीट्यूट। एक बैडमिंटन खिलाड़ी की हैसियत से ही यहाँ उसका दाखिला हो सका। फिर तो प्रतियोगिताओं में भाग लेने का सिलसिला चल पड़ा।

तभी चेन्नई की एक प्रतियोगिता में वह बात हुई। उस छोटी-सी बात ने आर्थर के समूचे जीवन को मानो झकझोरकर रख दिया। नदी पर बना एक छोटा-सा बाँध भी जैसे उसकी दिशा को सम्पूर्ण रूप से बदलकर रख देता है, उसी तरह उस मामूली-सी घटना के बाद आर्थर की जिंदगी की दिशा ही मानो तबसे बदल गई।

आर्थर का मुकाबला था पांडिचेरी के श्री अरविंद महाविद्यालय के एक छात्र के साथ। काँटे की होड़ थी। कोई किसी के आगे उन्नीस साबित नहीं हो रहा था। तभी चिड़िया (शटल) को उछलकर मारने में आर्थर अपना संतुलन बनाए नहीं रख पाया। वह जमीन पर गिर पड़ा। दाहिने घुटने में मोच आ गई। उसके मुँह से एक दर्द भरी चीख निकली। वह फिर अपने पैरों पर खड़ा ही न हो सका। लँगड़ाकर किसी तरह से वह पहुँचा अपने ड्रेसिंग रूम में।

रात भर वह कराहता रहा।

(क्रमशः...)

सी-26/35-40 ए, रामकटोरा
वाराणसी-221001 (उत्तर प्रदेश)

Take Care!

Jessie Wee

“Look out for traffic! Be careful! Don’t fall into the drain!”

“Oh, Mum! I’m only going to the shop to buy you a loaf of bread. The way you’re going on, the neighbours will think I’m cycling all the way to London! You know there’s very little traffic on our quiet estate roads ... and anyway, the drains are not even big enough for me to fall into!”

Shen’s mother sighed as she waved him away. Then as he cycled out of the gate, she called after him, “Look out for cars! Be careful! Take care!”

Shaking his head, Shen cycled past their row of terrace houses, turned left into a back lane and right again to the estate bakery. It was hardly a minute’s ride away. What *could* happen to him during such a short trip? His mother was making a big fuss over nothing! Take care, indeed! She really was something!

Shen sighed, left his bicycle on the road and walked up a flight of steps towards the bakery. He bought a loaf of bread after arguing with the baker’s boy over the shrinking size of the loaf and the extra ten cents he had to pay for it.



He was very angry when he left the shop. He was so angry he did not notice a van pulling up outside the bakery. Two men jumped out of the van and pushed him back into the bakery. One man pointed a gun at his head.

“Keep quiet if you don’t want a hole right through your head!” the gunman growled.

The other man ran into the shop and held a dagger under the chin of the baker’s boy. The boy turned as white as the slices of bread he had been cutting. His knees shook and his teeth chattered.

“Give me the keys to the till! Hurry up or I’ll Hurry up or I’ll slit your throat from ear to ear!”

The gunman pushed Shen up against the counter, next to the baker’s boy who was struggling to get the keys out of his pocket. The boy’s hands shook so much that the keys fell with a loud clang at Shen’s feet.

Shen held his breath as the gunman bent down to snatch up the keys. Should he kick the gun out of the man’s hand? What if the gun went off? What if he was not fast enough? No, the risk was too great.

“Here quick! Empty the till!” cried the gunman as he threw the keys to his friend. The gunman’s friend shoved the baker’s boy towards Shen, unlocked the till and crammed all the money into his pocket.

Shen recoiled as the baker’s boy collapsed into his arms, knocking his loaf of bread out of his hand. The loaf of bread fell on the floor.

“Hey! What’s going on in here! Who are you two men?” shouted the baker. He had just come out from a room at the back of the shop.

BANG! went the gun as the startled gunman pressed the trigger. The bullet slammed into the floor near Shen’s feet. His loaf of bread jumped up into the air

as the bullet went through it.

Shen and the baker’s boy jumped with fright.

The baker fled back into the room the slammed the door shut.

The gunman and his friend ran out of the shop, jumped into the van, reversed it, knocked down Shen’s bicycle, ran over its front wheel and then moved off like a streak of lightning.

Shen gasped. Stunned, he watched the van race down the road and disappear round a bend. He bent to pick up his loaf of bread, turned, and ran out of the shop. He wouldn’t stay there a minute longer than was necessary. Nothing like this had ever happened to him before! His own mother had warned him about the traffic, the drain and about not falling off his bicycle, but this was something else!

He ran to his bicycle and then gave an angry yell when he saw his flattened wheel. The van had run over it. What was he going to tell his mother? She would be horrified if she were to see him carrying his bicycle home.

His mother was not only horrified, she was speechless for a good five seconds. Then the words came rushing to her lips. “Oh, Shen, you were knocked down by a car! You fell off your bicycle! You fell into the drain! You...!”



“Mum...please, Mum! Let me explain! No... no... don't say anything! I was *very* careful! I looked out for the traffic. I didn't fall into the drain. I took great care of myself... but then I got held up in the bakery!”

“Oh Shen, my dear boy! My poor boy!” his mother cried over and over again.

Glumly, Shen held out the loaf of bread. His mother took it. And then she gasped. One of the fingers had slipped into a hole in the middle of the loaf.

“What's *this*?” she cried in amazement.

Shen stared at the loaf of bread. A bullet hole! The gunman's bullet must have hit the loaf of bread when his gun went off accidentally!

“That's a bullet hole! The gunman...”

But before Shen could finish his sentence, his mother had fainted.

“Mum...Mum...you haven't heard the whole story yet! You...” Shen broke off abruptly to stare at his unconscious mother.

“Oh me, oh my ! what am I going to do now?” he thought frantically.

Shen pulled the loaf of bread off his mother's finger and slipped it under her head. That would cushion for head while he ran over to Grandma's house. She would know what to do!

The next door neighbours came running Shen sprinted for the gate.

“What happened, Shen?”

“What's wrong with your mother?” cried the two neighbours, horrified at the sight of Shen's mother stretched out on the porch in full view of everyone passing by.

“Oh, Mrs. Chen...Madam Salimah! Please stay with my mother for a while. I’m going to call my grandma! I’m going over to call my aunts!”

“All right, boy! All right...but what happened? What *happened*?”

“There’s a bullet hole in the bread. The gun went off! The gunman escaped! My bicycle was run over! Please stay with my mother! I must call my grandma! I must call my aunts!” cried Shen as he ran off, greatly agitated.

The two neighbours stared at one another in shock. Soon they were joined by more neighbours who came rushing in through the open gate.

Mrs. Chen stared at the growing crowd and then blurted out in horror, “*Shen’s mother has a bullet hole in her head!*”

The crowd of women gasped.

“A gunman shot her!” wailed Madam Salimah.

“He ran over Shen’s bicycle,” wept Mrs. Chen.

“What shall we do?” asked Mrs. Bala. She looked very worried.

“Call the police! Ring up the ambulance! Ring up Shen’s father!” cried several voices.

“What...what...what’s wrong? Where...where...where am I?” cried Shen’s mother.

The neighbours drew back in alarm. Then they bent over Shen’s bewildered mother.

“Don’t move, Mrs. Huang! Don’t move! There’s a bullet hole in your head!”

“No... keep still, please, Mrs. Huang!”

“Don’t move! Shen’s gone to get his grandma and his aunts!”

“Mrs. Lin has gone to ring up the police!”

“The ambulance is on its way!”

“Be careful of the bullet hole in your head! Don’t move! Keep still!” cried the excited neighbours.

“I don’t need the police! I don’t need the ambulance! The bullet hole is *not* in my head! It’s in the *bread*!” cried Mrs. Huang. She pushed away the hands holding her down and struggled to her feet.

Mrs. Chen, Madam Salimah, Mrs. Bala, Mrs. Lin and all the other ladies gasped. They picked up the bread and examined it. Yes, there was a bullet hole right through the loaf of bread. Their fingers probed the hole. Yes, it was a hole all right! A *real* bullet hole!

“But who shot the bread?”

“Why shoot the bread?” asked several voices.

“Excuse me, ladies! “Excuse me, ladies! Oh, Mum...Mum! You’re all right! Grandma’s not in the house is all locked up!”

“What happened, Shen? *What happened?*” cried his mother.

“You sit down, Mum! You sit down and I’ll tell you!” sighed Shen.

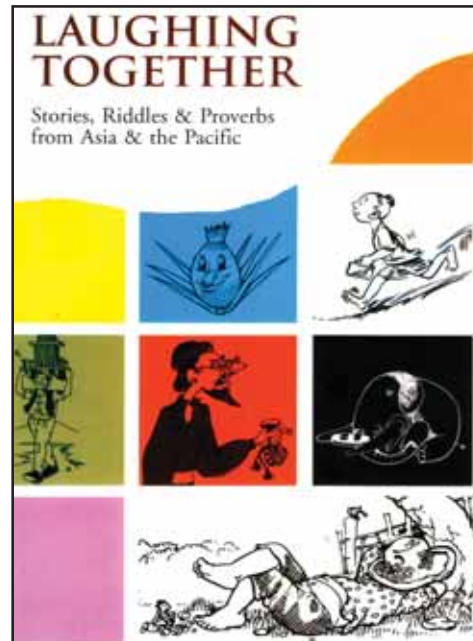
Everyone listened as Shen told his story. His mother gasped several times. So did the other ladies.

Excited cries filled the air as questions were asked and answers given. Finally, the police arrived. So did the ambulance.

Shen told his story all over again. He even showed the ambulance men the bullet hole in the bread. They shook their heads, then moved off to answer another call. Groups of people gathered to discuss the bread that was shot in the head. Then everyone followed the police to the bakery where investigations began in earnest.

The baker’s boy told his story, the baker told his story, and Shen told his story all over again. He had got over his shock and was beginning to feel that his encounter with the robbers was the highlight of his young life. It was the best thing that had happened to him – the most exciting adventure he had so far!

The crowd listened to his story three times over after the police left, taking the bread with the bullet hole in it with them. Then, their curiosity satisfied, they set off for home.



Shen sighed, bought another loaf of bread and walked home with his mother. It was getting dark and Dad would be coming home soon for dinner. Yes, he could tell Dad his story. Then, there would be Grandma and the aunts they would want to hear the story, too!

“Are you all right now, Mum?” asked Shen.

His mother nodded. She put her arms round him, thankful that he was safe.

Shen grinned and kissed his mother’s cheek. He would always be grateful to her. If she had not said, “Take care!” none of this would have happened to him.

(This is a story from Singapore included in NBT’s publication *Laughing Together* brought out in collaboration with Asian Cultural Centre for UNESCO)

झूम-झूम झपाक

प्रभात



झूम-झूम झपाक
झूम-झूम झपाक
झूम-झूम झपाक
टीचर के जाते ही बच्चे
बोले तपाक तपाक तपाक।

छम छम छमाक
छम छम छमाक
छम छम छमाक
छुट्टी के होते ही बच्चे
नाचे छमाक छमाक छमाक।

धम धम धमाक
धम धम धमाक
धम धम धमाक
स्कूल से घर आते ही बच्चे
कूदे धमाक धमाक धमाक।

31 बी, पुरुषार्थ नगर
जगतपुरा, जयपुर (राजस्थान)

बातूनी कछुआ

हरिकृष्ण देवसरे

नगर के बाज़ार में बड़ी गहमागहमी थी। लोगों की भीड़ खरीदारी में जुटी हुई थी। अचानक आकाश से एक कछुआ गिरा और जमीन पर गिरते ही वह मर गया। कछुआ बाज़ार के मुख्य सड़क पर गिरा था। कुछ ही देर में उस कछुए को देखने के लिए भीड़ लग गई। सबको आश्चर्य था कि पानी में रहने वाला जीव आकाश से कैसे गिरा। लोग तरह-तरह की बातें करने लगे। कोई बोला, यह कोई प्रेत आत्मा है। किसी ने कहा, यह महान विपत्ति की सूचना है।

उस भीड़ में भगवान बुद्ध भी खड़े थे। वह लोगों की बातकही सुन रहे थे। उन्होंने भीड़ को शांत रहने को कहा। फिर बोले, इस कछुए की मृत्यु का कारण मैं बताता हूँ। यहाँ से बहुत दूर घने जंगल के बीच एक सुंदर सरोवर है। वहाँ हिमालय से दो हंस आया करते हैं। यह कछुआ उसी सरोवर में रहता था। हंस के जोड़े और इस कछुए में मित्रता हो गई थी। लेकिन यह कछुआ बहुत बातूनी था। यह अहंकारी भी था और अपने को परम बुद्धिमान भी समझता था। यह हरदम कुछ-न-कुछ बोलता ही रहता था, इसकी जीभ कभी शांत न रहती थी।

तालाब के अन्य कछुए और मछलियाँ भी इसकी इस आदत से परेशान रहते थे। हंस भी

इसके इस बातूनीपन से बहुत चिढ़ते थे।

एक दिन हंस के जोड़े ने कहा, “मित्र कछुए, हम तुम्हें आज एक बुरी खबर सुना रहे हैं—इस सरोवर का पानी जल्दी ही सूखने वाला है। तुम हमारे मित्र हो, इसलिए तुम्हें यह बात बता रहे हैं। अपने जीवन की रक्षा के लिए अभी से सोच लो।”

कछुए ने कहा, “मुसीबत के समय मित्र ही काम आते हैं। अब तुम दोनों ही कोई उपाय बता सकते हो।”

हंसों ने कहा, “तुम चाहो तो हमारे साथ हिमालय प्रदेश चल सकते हो। वहाँ की किसी सुंदर-सी झील में सुख से रहना।”

कछुआ उनकी बात मान गया। हंस चले गए। सरोवर के सारे जीवों को कछुए ने अपनी हिमालय यात्रा के बारे में बता दिया। आज सुबह वे हंस इस कछुए को लेने आए। चलने से पहले उन्होंने एक शर्त रखी। वे कछुए से बोले, “तुम अपनी जीभ को एकदम रोककर रखना, जब तक हम न कहें बिलकुल मत बोलना।” बातूनी कछुआ उनकी शर्त मान गया। इसके बाद हंसों ने लकड़ी के एक टुकड़े को बीचो-बीच से कछुए के मुँह में पकड़वा दिया। फिर लकड़ी के दोनों सिरों को अपनी चोंच से पकड़कर उड़ चले।

कछुआ आकाश में उड़कर बहुत खुश हो

रहा था। वह अपनी खुशी को बड़ी मुश्किल से रोक पा रहा था। उसके गले में बार-बार खुजली होती थी। वह कहना चाह रहा था कि वाह...



वाह... कितना मजा आ रहा है! किंतु न बोलने की शर्त याद करके वह चुप था। भगवान बुद्ध ने कहा, जब यह हमारी बस्ती के ऊपर से गुजरा तब कुछ लोगों ने आश्चर्य-चकित होकर इस दृश्य को देखा, वे चिल्ला उठे—‘अरे देखो तो, दो हंस एक कछुए को टाँगकर ले जा रहे हैं!’

यह सुनकर कछुआ शर्त भूल गया और बोलने के लिए मुँह खोल बैठा कि वे मुझे अपनी खुशी से ले जा रहे हैं, तुम्हारा क्या बिगड़ता है! किंतु मुँह खोलते ही कछुआ उस लकड़ी से, जिसे उसने मुँह में दबाया हुआ था और हंसों के सहारे आकाश में उड़ रहा था, अलग हो गया और आकाश से सीधा यहाँ बाज़ार की सड़क पर आ गिरा।

जब कोई बिना सोचे-विचारे बातें करता है तब उसे ऐसी ही मुसीबत उठानी पड़ती है। उसकी दुर्गति कछुए के समान ही होती है। सोच-विचारकर कम बोलने वाला व्यक्ति सदा सुखी रहता है।

102, एच.आई.जी., ब्रजविहार,
पो. चंद्रनगर, गाजियाबाद-201011 (उत्तर प्रदेश)

The Old Woman

Devina Basu



Cancer — is the word that gives me goose-bumps. It reminds me of the indifference that we had shown towards the old lady in our neighbourhood. She was new to our neighbourhood. Her appearance was funny and it made us laugh. She was a fat, pot-bellied woman with wrinkles on her hands. Her thighs were huge and her feet big.

We thought that she was an old woman who, due to her age, was weak and couldn't take care of herself ... but we didn't really care.

We were so much engrossed in making fun of her that we weren't aware

that she was suffering from a deadly disease.

Being a young boy in my teens I didn't really understand much about the pain of the old woman and I never did really care to enquire about her health or even talk to her in a polite manner.

She was a poor woman and could not really afford much. We could have given her some money or even read her the *Bible* but we didn't, instead we spent our days teasing her.

We regret it now ... at least I do!

She had often told me that she was lonely, she liked me and craved for my

company, but I always brushed it away saying that I had little time to waste on her.

Now, when I think of how rude I had been to her, it makes me cry. She often used to tell us about bad effects of smoking and drinking because her son died of lung cancer due to addiction. We never listened to her. We told her that we didn't care about her dead son and did not heed her advice.

After sometime, arrived the biggest problem in her life – *cancer*.

We had noticed her face getting blown up and even her body. Her health was deteriorating. I was worried. A chapter that I had studied in middle school came back to me. It spoke about lung cancer and its symptoms. But I couldn't remember anything written in the chapter because I had not paid attention then.

That night, I looked up the internet and understood that 'our' old lady had the symptoms of lung cancer.

Next morning, I went straight to her house, picked her up and drove her to the hospital. After many tests, my worst fear was confirmed. I admitted her to the hospital immediately and told my parents over the phone about the old lady. They scolded me for my earlier behaviour towards her. They instructed me to do everything I could to prevent her from

getting the *cancer*, regardless of what the cost was.

Over the next few weeks, I did everything I could for the old lady. As my parents were out of town, I paid for her chemotherapy and other treatments. Though my friends thought it to be stupid and unnecessary.

I spent every minute of my spare time with her. Even after six weeks, she wasn't getting better but on the contrary her condition was worsening. The doctors told me that they'd done all they could and now all we could do was wait and watch ... which was another way of saying that she was dying. I couldn't believe it.

A couple of days after that, when I was feeding her soup, she told me that I shouldn't blame myself and that it would hurt her deeply. She told me that the only reason she had returned to her old habits was that she saw me as her own son and seeing me wasting my life was too much for her.

Four days after that, on 17th May 2007, *Alberta Christine Matthews* died. Yes, that was the name of 'our' old lady, though strangely, it hardly mattered to me. She would remain the 'sweet old lady' to me forever. I remained speechless that day. I couldn't cry.

After her body was taken away, the doctor came to me and gave me a letter



saying that it was found beneath her bed. It was addressed to me. It read:

Dear Jonathan,

I will always be in debt because of the love you have shown to me. I don't know how I can ever repay you for your kindness? I don't think, I will have enough time to do so.

You've always reminded me of my son and I've always loved you. You stood by me when no one was there. You've acted like a son. I hope you'll always remember me. If I've ever been of any help to you, I shall be happy. Forgive me,

if I've ever made any mistakes. God bless you!

Yours
Alberta

She will always be in my memories, till the day I die. She has had a huge influence in my life. I have quit smoking and drinking for good. I have lost all my friends that I had, but I've realised that they weren't my true friends.

So old lady, hats off to you for doing so much for me. I hope you are having a spectacular life in heaven.

3 Regent Park, Kolkata-700040 (W.B.)

Grandmother

Hemant Kumar



Grandmother...
O, my grandmother!
Where are you?
Where are your sweet songs?
Where is your sweet food?

I always miss your soft touch
On my forehead
I always miss your fairy tales
At the bed time

Where is that blue sky
And full moon light
The soothing shade
Of those mango trees?

I always remember my childhood
And the time I spent with you
My tear swollen eyes for want of food
And your sweet words
“Wait my prince!”
“I am baking breads for you”
And your fingers getting burnt
From the frying pan due to hurry

And I also remember your sweet lullabys
Which you always sang to me at dinner
time
To feed me with your loving hands
Will these things never return...
Can you not come back to me?

*RS-2/108, Rajya Sampatti Avasiya Parisar
Sector-21, Indiranagar
Lucknow-226016 (Uttar Pradesh)*

लालची हलवाई

मीता संगेलियाँ



चंदू नाम का एक आदमी एक छोटे-से गाँव में अपनी मिठाई की दुकान खोलने के लिए आया था। उसका छोटा-सा परिवार था। उसकी पत्नी और उसके बेटे अशोक ने घर से थोड़ी दूरी पर ही अपनी मिठाई की दुकान खोलने का फैसला किया।

चंदू की दुकान के पास एक और मिठाई की दुकान थी। इस दुकानदार का नाम नानक हलवाई था। आम तौर पर उसकी मिठाइयाँ कोई नहीं खरीदता था और इधर चंदू की दुकान पर कितने ही लोग मिठाई खरीदने के लिए आए हुए थे। चंदू की मिठाई बहुत जल्दी-जल्दी बिक रही थी।

ये सब देखकर नानक हलवाई को बहुत गुस्सा आ रहा था। उसने सोचा, अगर ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन मुझे खाने के लाले पड़ जाएँगे और मैं सड़क पर आ जाऊँगा।

कुछ-न-कुछ तो करना ही पड़ेगा।

एक दिन जब चंदू हलवाई मिठाई बना रहा था तो नानक हलवाई ने चुपके से उसकी खिड़की में से झाँककर देखा कि ये कैसे मिठाई बना रहा है। और फिर अपने घर जाकर बिलकुल उसी तरह मिठाई बनाने लग गया, जैसे चंदू हलवाई ने बनाई थी।

और सुबह-सुबह अपनी मिठाइयाँ लेकर दुकान पर आ गया और जोर-जोर से आवाज लगाने लगा-मिट्ठी-मिट्ठी मिठाई खाकर देखो! एक बार खाओगे तो बार-बार माँगोगे! तो कुछ गाँववालों ने नानक हलवाई की मिठाई खरीदकर खाई, उन्हें बहुत पसंद आई।

गाँववालों को नानक हलवाई की मिठाई खाते देख और लोग भी उसकी मिठाई खाने आ गए। ये देख चंदू खुश हुआ और नानक को बधाई देने चला गया, “अरे नानक भाई, मुबारक

हो! आज तो तुम्हारी सारी मिठाई बिक गई!”

“हाँ चंदू भाई, सब भगवान की कृपा है।
लो चंदू भाई, आप भी चखकर देखो।”

“हाँ-हाँ, बिलकुल, हमें भी चखाओ!”

चंदू मिठाई खाकर देखता है और मन-ही-मन सोचता है कि ये मिठाई तो बिलकुल वैसे ही बनी है जैसे कि उसकी मिठाई। लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है! शायद नानक भाई का भी वही तरीका हो मिठाई बनाने का, जैसा मेरा।

और चंदू ने वो बात वहीं खतम कर दी और अगले दिन के लिए एक अलग-सी मिठाई बनाई, जिसे बनाने में उसके बेटे अशोक ने अपने पिता की मदद की। पर चंदू और उसके बेटे को क्या पता था कि जो मिठाई वो बना रहे हैं उसी मिठाई को नानक हलवाई सीखने के लिए उन्हीं की खिड़की में से झाँक रहा है! और मिठाई बनाना सीखते ही नानक फटाफट अपने घर जाकर वही मिठाई बनाता है।

और अगली ही सुबह दुकान पर मिठाई को बेचने आ जाता है और फिर जोर-जोर से आवाज लगाने लग जाता है, “देखो लोगो, देखो, एक नई मिठाई खाकर तो देखो, आओ-आओ!”

लोगों की भीड़ नानक हलवाई की दुकान पर लग जाती है। उस मिठाई को लोग वहाँ खाते भी हैं और अपने घर भी लेकर जाते हैं।

यह देखकर चंदू सोच में पड़ जाता है और फिर नानक उसके पास आता है। “अरे चंदू भाई, क्या हुआ, आज भी आपकी मिठाई

नहीं बिकी क्या?”

“हाँ नानक भाई, नहीं बिकी, चलो, कोई बात नहीं। आज नहीं बिकी तो कल बिक जाएगी।” और फिर नानक हलवाई अपनी मिठाई चंदू हलवाई को देता है और कहता है, “अरे खा लो चंदू भाई!”

चंदू हलवाई को नानक की मिठाई खाने का बिलकुल भी मन नहीं करता, फिर भी वो थोड़ी-सी मिठाई चख लेता है और नानक हलवाई से कहता है कि नानक भाई, ये मिठाई तो बिलकुल मेरी मिठाई के जैसी ही है और इसका स्वाद भी मेरी मिठाई के जैसा है। नानक गुस्से से बोलता है, “अरे चंदू भाई! ये क्या कह रहे हो? ये मेरी बनाई हुई मिठाई है, आपकी नहीं। पता नहीं कहाँ-कहाँ से चले आते हैं!” नानक हलवाई चंदू हलवाई को जवाब देकर चला जाता है।

चंदू हलवाई सोचता-सोचता अपने घर चला जाता है। पिता को उदास देख उसका बेटा अशोक अपने पिता से पूछता है, “क्या हुआ पिता जी, आप इतने निराश क्यों हैं?”

“कुछ नहीं बेटा!”

“नहीं-नहीं पिता जी, कुछ-न-कुछ बात तो जरूर है! बताओ न पिता जी!” चंदू अपने बेटे को सब कुछ बता देता है। यह सुनकर चंदू का बेटा बहुत गुस्सा होता है, “हो-न-हो पिता जी, आपका शक बिलकुल ठीक है। पर ऐसा नहीं चलेगा पिता जी। हमें कुछ-न-कुछ तो करना ही होगा!” और तभी अशोक के दिमाग में एक योजना आती है। वह योजना अशोक अपने पिता को बताता है।

अशोक और चंदू मिठाई बनाने लग जाते हैं और तभी चंदू की नजर खिड़की पर पड़ती है। नानक हलवाई उसी के घर की खिड़की के पास खड़ा हुआ था। तभी चंदू जोर से अपने बेटे को कहता है, “अरे अशोक बेटा, हम आज एक अलग तरह की मिठाई बना रहे हैं, जिसमें काली मिर्च बहुत जरूरी है!” तभी अशोक जवाब देता है, “हाँ-हाँ पिता जी, इस मिठाई में मिठाई का स्वाद दुगना करती है ये काली मिर्च!”

यह सुनकर नानक हलवाई जल्दी-जल्दी मिठाई बनाने लग जाता है। “अरे वाह! आज फिर रुपये की बारिश होगी।”

नानक ने जल्दी-जल्दी सारी मिठाई बना ली और अगली सुबह अपनी मिठाई ले दुकान में आ गया। और आज तो उसने आवाज भी नहीं लगाई। बिना उसकी आवाज के गाँव के लोग उसकी मिठाई खरीदने आ गए। लेकिन आज नानक की मिठाई खाते ही सबने उलटी करनी शुरू कर दी, “अरे! ये कोई मिठाई है! छी: छी:! कितनी गंदी है!”

अब गाँववाले चंदू की दुकान की ओर मुड़े और वहाँ से मिठाई लेने लगे। “अरे वाह, ये है मिठाई! अब चाहे जो भी हो हम तो चंदू हलवाई से ही मिठाई खरीदेंगे!”

चंदू की दुकान मिठाई से बिल्कुल खाली हो गई। एक मिठाई भी नहीं बची। नानक हलवाई को सब समझ में आ जाता है और हाथ जोड़कर वह चंदू हलवाई से माफी माँगता है। “मुझे माफ कर दो चंदू भाई!



मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। जैसा भी हो, पहले मेरी मिठाई बिक तो रही थी, पर अब तो शायद कोई भी नहीं खरीदेगा!” चंदू ने नानक को दिलासा दिया और कहा, “नानक भाई, तुम्हें जैसा भी आता है वो बहुत अच्छा है, तुम चिंता मत करो। जैसे पहले तुम्हारी दुकान चलती थी, अब भी वैसे ही चलेगी।”

“तुमने मेरी आँखें खोल दीं। एक बार फिर हाथ जोड़कर मैं तुमसे माफी माँगता हूँ। आज के बाद मैं कभी ऐसा नहीं करूँगा!”

और थोड़े ही दिन बाद जैसे चंदू की दुकान पर लोगों की भीड़ जम जाती थी वैसे ही नानक की दुकान पर भी लोगों की भीड़ लगने लगी। और चंदू और नानक हलवाई मिलकर अपनी-अपनी दुकान खुशी-खुशी चलाने लगे।

2515 जय विहार, निकट रेलवे स्टेशन
गुड़गाँव-122001 (हरियाणा)

चटपटे दही-बड़े

अनिल 'सवेरा'

बंदर भैया के ब्याह में
बने चटपटे दही-बड़े
हाथी दादा सौ खा गए
बिन सोचे ही खड़े-खड़े।

सौ खाकर भी पेट भरा न
बंदर से बोले दादा—
“भैया भूखा रह गया हूँ
खिलवाओ मुझको ज्यादा!”

बंदर बोला—“प्यारे दादा!
रहम तुम कुछ मुझ पर खाओ
मेहमान भूखे चले जाएँगे
कृपया तुम अपने घर जाओ।”



829, राजा गली, जगाधरी-135003
(हरियाणा)

A Foolish King

Prabir Kumar Pal

Once there was a king. He was very cruel. He never loved his subjects. His main joy was to punish people.

His son was also a boy of no virtue. Like his father, he was nitwitted and reckless. He always loved to show his bravado.

One morning he went out with his horse for a joy ride. He whipped and whipped the horse. The horse ran faster and faster. But, alas! the prince could not keep control. He fell down, got badly injured and died.

From lip to lip the news of his death ran. The cause of his death was explained in many ways. Someone said that the prince was murdered. The king heard it.

He became angry.

Soon he passed an order to find out the murderer.

His guards, servants, fighters, spies and even the jester ran to catch the culprit.

They were trembling in fear. Because the king would hang them. But the jester was not worried. The king was a great fool. He knew it well. So he made a plan.

He brought two asses. He said to the



king, “These two asses have murdered the prince. The secret murderer is called an ‘Assassin’. There are two asses in the word. These two asses came into my room to see if I was searching for them. Just then I caught them.”

The silly king took them as murderers. With the beating of drums he hanged them. He got so much joy that he forgot the death of his son.

*Purbagopalpur Primary School
P.O. Bhadrapur, Birbhum (W.B.)*



Two Poems

Dash Benhur



Water



Water is the gift of god
Can we say this now?
What man has done with nature's gift
Every child does know.

The rivers have turned to garbage dumps
The sky is black with soot
The oceans are choked with stinking
sludge
Who'll live to share the loot?

We've broken all of nature's rules
Thinking we know the best
We're just a pack of arrogant fools
Failing nature's test!

Water is the spice of life
Water lets us live
Never asks for any return
Only knows to give.

Come friends, let's join hands
Let us rescue water
Save the water, save the earth
And tomorrow will be better.



Pigeon

It's only a tiny, common bird
Yet it flies ever so high
When it soars into the sky
I can only look up and sigh.

It's only a timid bird
Sheltering in the house
Living in constant fear of
The cat, the dog and the mouse.

I'm a normal healthy boy
Growing big and stout
Yet I never dare to venture far
Lest danger be about.

I should be like the pigeon
Soaring ever so high
Ready to face any challenge
My courage shall not die.



dashbenhur@yahoo.com

जब ताजमहल नीलाम होते-होते बचा

अंकुश जैन

जी हाँ, ताजमहल एक समय नीलाम होते-होते बचा।

लार्ड कर्जन ने 7 फरवरी, 1900 के दिन एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के समक्ष अपने इतिहास प्रसिद्ध भाषण में ताजमहल की नीलामी के रहस्य का उद्घाटन किया था। लार्ड कर्जन विलियम बैटिंग के समय में ताजमहल को, उसके संगमरमरों को बेचकर धन इकट्ठा करने के लिए, नष्ट करने की योजना बनी थी। उसी गवर्नर जनरल ने हिंदुस्तान के शहंशाह शाहजहाँ के महल के संगमरमर के कुंड (मच्छी कुंड) को नीलामी पर चढ़ाकर बेच दिया था।

सन् 1828 में ईस्ट इंडिया कंपनी की आर्थिक स्थिति खराब हो जाने के कारण ताजमहल के संगमरमर को बेचकर धन प्राप्त करने का प्रस्ताव रखा गया था। वास्तव में ताजमहल में संगमरमर के मूल्य को आँकने के लिए ही मच्छी कुंड के संगमरमर को नीलाम किया गया था, पर आशा के विपरीत उसका बहुत कम मूल्य निकला।

अनुमान लगाने पर पता चला था कि संगमरमर के अनुमानित मूल्य से कहीं अधिक उसे ढहाने और उसका संगमरमर इंग्लैंड भेजने पर व्यय हो जाएगा।





तब लार्ड विलियम बैंटिंग ने भारत में ही ताजमहल को नीलाम कर धन इकट्ठा करने का विचार किया। ऐसा उसने उन अँग्रेज व्यापारियों के सुझाव पर किया, जो भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से आए थे और जिन्होंने ताजमहल को देखा था।

अँग्रेज सरकार की ओर से जुलाई 1831 की 20 तारीख को आगरा के ताजमहल की नीलामी का हिंदुस्तान भर में ढिंढोरा पीटा गया।

“खलक खुदा का, मुलक अँग्रेज बादशाह का, हुकुम कंपनी बहादुर का, सब लोग रुककर सुनते जाओ, कंपनी बहादुर का कहना है कि दिन दोपहर 20 जुलाई, 1831 ई. को 11 बजे ताजबीबी का रौजा नीलाम होगा। जिस किसी को बोली बोलकर खरीदना हो वह ताजमहल के सदर दरवाजे पर हाजिर रहे... एऽ एऽ!”

सरकार का अनुमान था कि ताजमहल कम-से-कम दो करोड़ रुपयों में नीलाम हो सकता है, पर अधिकतम बोली लगी डेढ़ करोड़ की, जबकि ताजमहल के निर्माण पर छह करोड़ रुपये व्यय हुए थे।

डेढ़ करोड़ रुपये को अंतिम बोली मानकर सरकार स्वीकार कर लेती, परंतु जन असंतोष के कारण अँग्रेज सरकार ने विवश होकर ताजमहल को नीलाम नहीं किया। अपने बचाव के लिए सरकार ने कहा कि बोली के कम लगने के कारण ताजमहल नहीं बिका। इस प्रकार ताजमहल नीलाम होते-होते बच गया।

कलकत्ता (अब कोलकाता) से प्रकाशित होने वाले ‘जानबुल’ ने अपने 31 जुलाई, 1831 के अंक में एक समाचार प्रकाशित किया, ‘गवर्नर जनरल ने आगरा की मोती झील के संगमरमरों को 1,25,000 रुपयों में बेच दिया और उसे अब धराशायी किया जा रहा है। ताजमहल को भी नीलामी द्वारा बेचा जा रहा था पर उसका वांछित मूल्य न मिल सका।’

इसके बाद भी ताजमहल को बेचने के प्रस्ताव पर विचार होता रहा, पर 1935 में इस प्रस्ताव को सरकार ने सदा के लिए रद्द कर दिया। ताजमहल का सौभाग्य था कि वह बच गया और व्यापारियों के लालच का शिकार न बन पाया।

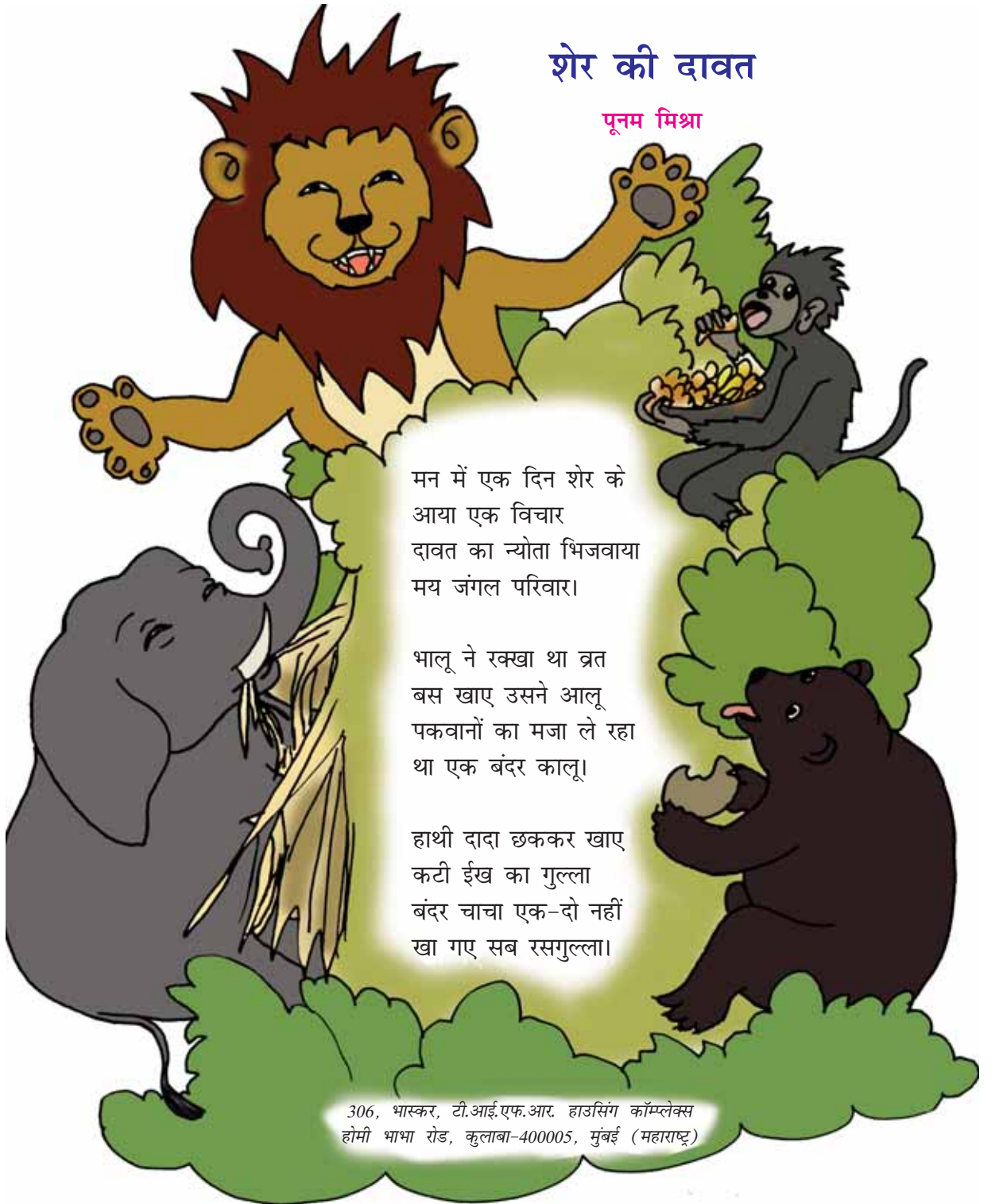
अंत में, लार्ड कर्जन द्वारा पुरातत्व विभाग की स्थापना कर किसी भी ऐतिहासिक या सार्वजनिक इमारत को नुकसान पहुँचाना कानूनन अपराध घोषित कर दिया गया।

जैनसन वाला स्टेशनर्स

पचपहाड़ रोड, भवानी मंडी-326502 (राजस्थान)

शेर की दावत

पूनम मिश्रा



मन में एक दिन शेर के
आया एक विचार
दावत का न्योता भिजवाया
मय जंगल परिवार।

भालू ने रक्खा था व्रत
बस खाए उसने आलू
पकवानों का मजा ले रहा
था एक बंदर कालू।

हाथी दादा छककर खाए
कटी ईख का गुल्ला
बंदर चाचा एक-दो नहीं
खा गए सब रसगुल्ला।

306, भास्कर, टी.आई.एफ.आर. हाउसिंग कॉम्प्लेक्स
होमी भाभा रोड, कुलाबा-400005, मुंबई (महाराष्ट्र)

Dehradun 2025

Kartik Dhiman



It was a normal day. I woke up early in the morning and found myself lying on the bed and to my amazement I found that my bed was attached with new electronic gadgets. I wished to spend my whole day with the gadgets but I had to get ready for the school a little earlier as I had to attend a workshop in my school.

When I left for school, I discovered that my house was surrounded with many huge buildings that did not exist earlier. This left me wondering, it was not possible because the place where I lived had no buildings at all. I felt like as if I was in a big city like Los Angeles or Boston.

When I moved further, I noticed that Dehradun was very clean as if it was the cleanest city of the world. I always dreamed about visiting Singapore or Dubai but now Dehradun looked like them.

On my way to school, I also observed that now Dehradun had its own airport from where both domestic and international flights were taking off.

As I moved closer to my school, I saw that bullet trains – the fastest trains in the world – were departing from the railway station. I also found that a huge flyover was built over the Rajpur Road with traffic signals all over and very few vehicles running on it.

Finally, I reached school, met my friends and attended the workshop.

After school, I reached home and started doing my home work. I began my work by writing the date *4 August 2013* in my notebook. My sister interrupted and told me that I had written the wrong date as today the date was *5 July 2025*.

I was shocked and thought that I should ascertain the date from my mother. I ran towards the kitchen to see if my mother was there or not but I slipped over on a banana peel.

Can you guess what it broke...? It didn't break my bone or any other part of my body. It broke my dream... a dream of *Dehradun 2025*!

*Jaswant Modern School
Dehradun-248001 (Uttarakhand)*

पहेलियाँ

लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'



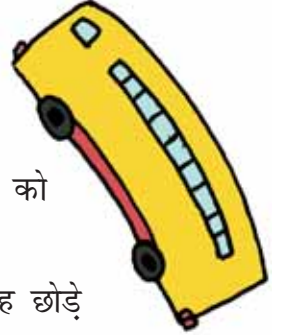
1.

काली-काली, देखी-भाली
छेड़े तान निराली
बगिया में वह आकर बैठे
इस डाली, उस डाली।



3.

एक नार कितने बच्चों को
उठा-उठा ले जाए
दिन भर एक जगह वह छोड़े
फिर वापस ले आए।



औरों के घर पाले बच्चे
वह खुद मौज उड़ाए
नहीं है बुलबुल, नहीं है मैना
उसको कौन बताए।



कभी-कभी वह घर ही रहती
करती जरा सफाई
नहीं है बिल्ली, नहीं है मुर्गी
क्या जो फिर है आई?



2.

बुरा न कोई काम करे पर
रह-रह ठोकर खाए
उसे मारने क्यों हर कोई
दौड़ा-दौड़ा आए?



फिर भी खुशियाँ दे बच्चों को
करता रहे निहाल
नहीं है घोड़ा, नहीं है गधा
करता कौन कमाल?



ए-20/4, फेज-1, डी.एल.एफ. सिटी
गुड़गाँव-122002 (हरियाणा)

समस्ये १. कोषात्, २. फलान्, ३. वसुधैव कुटुम्बकम्

The Portrait

Darshil Shastri

The canvas was his creation, the palette his fantasy
As he painted relentlessly towards ecstasy
Oblivious to the world but devoted to his muse
Unrelenting, beauty and perfection he pursues

The toil rewards him, with a master piece so rare
Senses fail; all he does is stand and stare
His passion breathes life into the paper
The damsel enchants him into a pleasant stupor

Lost in the long twirls that flow unbound
The doe-eyed gaze, leaves you spellbound
The lips curl into a smile that reaches the eyes
Yet beyond everyone's grasp this damsel lies

Captivated by his work, the creator becomes its slave
The word spreads of its beauty due to his flattering rave
From far and wide come people, to meet the same fate
One look it takes, to pass into the hapless state

Obsessed by her beauty
His brushstrokes never the same
He loses sanity
For the damsel cast had her spell
Smitten for eternity.



darshil.shastri@live.in

खुद करके देखो

जानवर सम्भालें धागा-कैंची

आइवर यूशिएल

ये चीजें जमा करो :

दो विभिन्न रंगों के मोटे कपड़े के टुकड़े, सूई-धागा, कैंची, रूई।

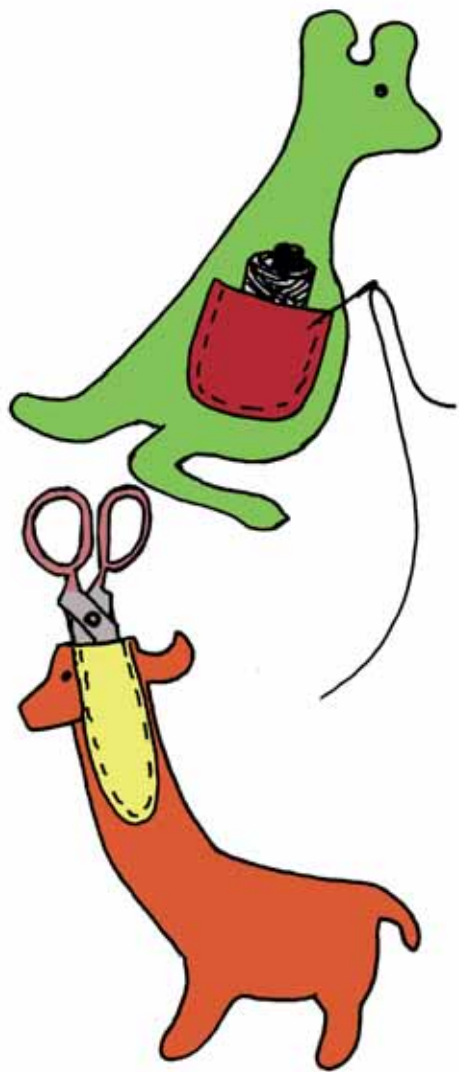
बनाना शुरू करो :

यहाँ दिए गए चित्रों के आकार के कपड़े के दो-दो टुकड़े काटकर इन्हें चारों ओर से सी दो। इससे क्या होगा कि एक जोड़े से कंगारू बन जाएगा और दूसरे से जिराफ। पर एक बात का ध्यान रखना भई कि कंगारू की सिलाई करने से पहले इसके पेट पर दूसरे रंग के कपड़े की जेब भी सीनी है, जिसके लिए जेब की नीचे की तीन तरफ सिलाई होगी और ऊपरी सिरा खुला छोड़ दिया जाएगा, ताकि सूई को धागे की रील में खोंसकर इस जेब में रखा जा सके। इसी तरह, जिराफ की सब ओर तो सिलाई होगी पर इसका ऊपरी सिरा कैंची रखने के लिए खुला छोड़ दिया जाएगा।

एक और जरूरी बात। कंगारू हो या जिराफ, इनकी सिलाइयाँ पूरी करने के पहले इनमें रूई भी ठूँसनी है, खूब अच्छी तरह, यह भी ध्यान रखना।

अब या तो इन जानवरों के सिर की ओर धागे का फंदा-सा बनाओ-इन्हें किसी कील आदि से लटकाने के लिए, या फिर

इनको लटकाने का दूसरा तरीका है कि इनके पीछे की तरफ तुम एक-एक छेद कर दो। बस, इस तरह हमेशा ठिकाने पर मिलेगा अब तुम्हें सिलाई का अपना यह सामान।



Interesting Facts about September

Surekha Sachdeva

September is the ninth month of the year in the Julian and Gregorian calendars. On 23rd day of this month, falls the equinox which brings Autumn in the Northern Hemisphere and Spring in Southern Hemisphere. Some major historical events and inventions took place in this month. Not only this, many personalities in the field of science, literature and arts were also born in this month.

1 September

- 1939: World War II began with German invasion of Poland

2 September

- 1945: World War II ended with the surrender of Japan

3 September

- 1875: Ferdinand Porsche, a German inventor who designed the Porsche and Volkswagen cars was born



- 1971: Kiran Desai, an Indian author who won the Man Booker Prize in the year 2006 was born

- 1976: Viking II spacecraft landed on Mars at Utopia Planitia

5 September



- Teacher's Day is celebrated in India in honour of Dr Sarvepalli Radhakrishnan, former President of India who was also a great philosopher and teacher



- 1997: Mother Teresa, Nobel Peace Prize winner, died

6 September

- 1766: John Dalton, renowned scientist was born

8 September



- 1933: Asha Bhosle, famous singer was born

- UNESCO celebrates the International Literacy Day across the world to spread literacy awareness amongst world's illiterate community

11 September

- 1816: Carl Zeiss, noted German optician was born

13 September

- 1916: Roald Dahl, children's author was born

15 September

- 1890: Bestseller novelist Agatha Christie was born

16 September

- 1916: M S Subbulaxmi, famous carnatic vocalist and Bharat Ratna recipient was born



21 September

- 1866: H.G. Wells, the father of science fiction, was born
- International Alzheimer's Day or the World Alzheimer's Day is observed every year to spread the understanding of this degenerating disease of the central nervous system
- United Nations celebrates World Gratitude Day to foster 'an idea of gratitude' in people so that they appreciate good things about others

26 September



- 1820: Ishwar Chandra Vidyasagar, well-known writer and reformist was born

- 1888: T.S. Eliot, famous writer was born



- 1923: Dev Anand, one of the popular Bollywood actors was born

27 September

- 1825: The first passenger train became operational in England

28 September



- 1907: Bhagat Singh, the great freedom fighter was born



- 1929: Famous singer, Lata Mangeshkar was born

surekha_sachdeva@rediffmail.com

National Centre for Children's Literature Library: A Profile

National Centre for Children's Literature (NCCL) has a Library-cum-Documentation Centre with a collection of over 15,000 books on children's literature covering wide range of subjects in 44 languages of the world (18 Indian and 26 foreign languages). Over 50 periodicals of children's literature in various Indian languages are also subscribed by the Library for reading and reference of the library users. The Library has recently been remodelled to give an ultra-modern look and provide quality services to the users. Located at the ground floor at the premises of the Trust, the Library is spread over an area of 96.2 sq mts. It has been designed keeping in mind the multifarious needs of the users.

The Library has the following holdings:

- **Research and Reference:** over 600 rare reference books to help professionals, scholars and researchers for their research work, surveys etc.

- **Media/Multi-Media:** 150 DVDs/Videos on children's literature, a touch screen, 4 PCs and one LCD TV.

- **Books for Children and Young Adults:** over 15,000 books (both fiction and non-fiction) for children and young adults on various themes from around the world.

Reading Room Facilities:

Reading tables, chairs, book shelves, library space, recessed lights, anti-skid flooring, wooden steps and appropriate ventilation for users for providing ideal atmosphere for reading.

Networking: NCCL Library is connected with over 4,000 DELNET member libraries through internet including Delhi Public Library, Jawaharlal Nehru University Library etc.

Who can be a member of the NCCL Library?

Anybody working in the field of children's literature, established and budding writers, editors, librarians, illustrators, publishers, researchers, teachers among others.

How can one become a member of the NCCL Library?

To become a member of the NCCL Library one can fill up the membership form and pay Rs 100/- as one time membership fee and Rs 500/- for general members and Rs 250/- for budding writers as the case may be as refundable security. Free temporary membership (Reading Room Facility only) for outstation experts on visit to Delhi for Library consultation is also available.

The Library is also open to school children for group visit.

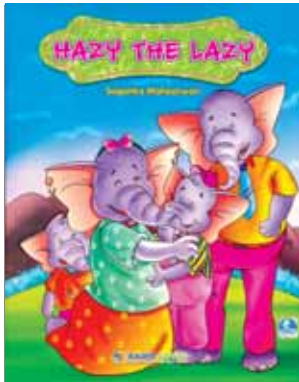
गुलाब का दोस्त

गुलाब के फूल की पंखुड़ी-पंखुड़ी तोड़कर, मसलकर फेंक देना हमारे दैनिक जीवन का एक आम अनुभव है। लेकिन प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने गुलाब के फूल के प्रति अपनी करुणा और संवेदना जताते हुए सुहेल नाम के पात्र के माध्यम से हमें गुलाब से प्यार करने की प्रेरणा दी है। सुहेल अपने पापा के साथ पापा के स्कूल गया है और वहाँ मुरझाए गुलाब के फूल को देखकर द्रवित हो जाता है। फिर वह गुलाब के पौधे के लिए खाद-पानी की व्यवस्था करता है। उसके इस प्रयास से गुलाब का पौधा फिर से जी जाता है। एक संदेशपरक पुस्तक



गुलाब का दोस्त

चित्र : उत्तम कुमार बाला
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली
रुपये 45.00



Hazy the Lazy

Sagarika Maheshwari

Aadya Books

Rs. 50.00

Hazy the Lazy

A story about a baby elephant 'Hazy' who lives in a forest with a herd of elephants. He is the laziest elephant in the herd and his fellow elephants call him with the name 'Hazy the Lazy'. One day, Hazy decides to leave the herd but at night he feels lonely and misses his mother. Finally, he learns a valuable lesson of being careful and attentive. The small children would find this book interesting and inspiring. The book has attractive illustrations and has been written in easy language.



राष्ट्रीय पुस्तक न्यास
की चुनिंदा पुस्तकें
आदेश हेतु
ऑनलाइन भी उपलब्ध

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास
किताब क्लब के सदस्य बनें और
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के प्रकाशनों
पर 10 प्रतिशत की छूट पाएं

अधिक जानकारी के लिए
कृपया संपर्क करें :



राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया,
फेज-II, वसंत कुंज,
नई दिल्ली-110070

दूरभाष : 91-11-26707700

फैक्स : 91-11-26121883

ई-मेल : nbtindia@nbtindia.org.in

वेबसाइट : http://www.nbtindia.gov.in

मुंबई : दूरभाष व फैक्स : 91-22-23720442

ई-मेल : wro.nbt@nic.in

बंगलुरु : दूरभाष व फैक्स : 91-80-26711994

ई-मेल : sro.nbt@nic.in

कोलकाता : दूरभाष व फैक्स : 91-33-22413899

ई-मेल : ero.nbt@nic.in

नए प्रकाशन : पढ़ते जाएं, बढ़ते जाएं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के प्रकाशन

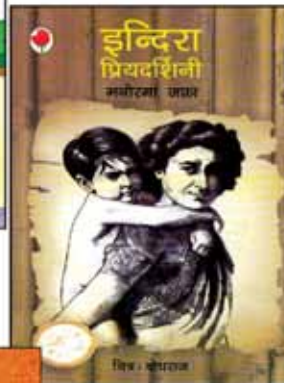


सितारों से आगे

विमला भंडारी

पृ. 102 रु. 35.00

ISBN 978-81-237-6606-5

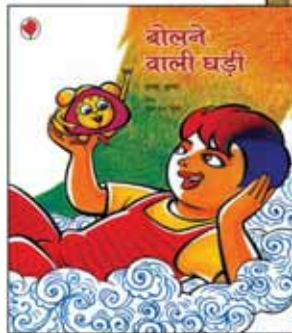


इन्दिरा प्रियदर्शिनी

मनोरमा जफ़ा

पृ. 72 रु. 30.00

ISBN 978-81-237-6494-4

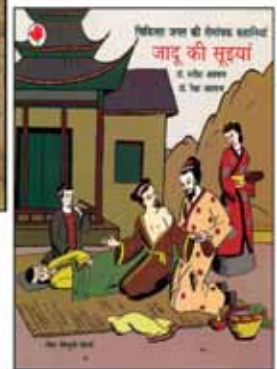


बोलने वाली घड़ी

क्षमा शर्मा

पृ. 16 रु. 25.00

ISBN 978-81-237-6697-3



जादू की सूइयां

डॉ. यतीश अग्रवाल

डॉ. रेखा अग्रवाल

पृ. 72 रु. 75.00

ISBN 978-81-237-6640-9



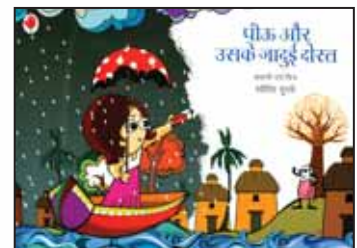
काकी कहे कहानी

मोनिका गुप्ता

चित्रांकन : अरुण गुप्ता

पृ. 16 रु. 25.00

ISBN 978-81-237-6234-0



पीऊ और उसके जादुई दोस्त

कहानी एवं चित्र : सोरित गुप्ता

पृ. 20 रु. 30.00

ISBN 978-81-237-6247-0